मौन *का* क्रम



İLKER YARDIMCI

मूर्तियों की एक दृश्य और चिंतनशील सूची

मूर्तियाँ 2026

मौन का क्रम

मौन *का* क्रम

मौन की ज्यामिति और आंतरिक क्रम

मूर्तियाँ 2026

İLKER YARDIMCI

मौन का क्रम: मूर्तियाँ 2026
हिंदी संस्करण, 2026।

© 2026 İlker Yardımcı (इल्केर यारदिमजी)। सर्वाधिकार सुरक्षित।
कलाकार की लिखित अनुमति के बिना इस प्रकाशन का कोई भी भाग पुनः प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।

चित्र ढलाई-योग्य 3D मॉडलों के डिजिटल दृश्यांकन हैं।
चित्र-छायाचित्र: © Spartak Dabriyranok।

उद्धरण सार्वजनिक-क्षेत्र के स्रोतों से हैं; हिंदी अनुवाद स्वयं किए गए हैं।

ISBN: [आवंटित किया जाना है]

ilkeryardimci.com
mail@ilkeryardimci.com

विषय-सूची

कलाकार के बारे में 6

प्रस्तावना: विषय-वस्तु और मूर्तियों पर 7

शृंखला वक्तव्य 8

कृतियों के बारे में 9

चित्र-फलक 10

कोलोफ़ोन 43

33 चित्र-फलक



चित्र-छायाचित्र: © Spartak Dabriyranok

ilkeryardimci.com
mail@ilkeryardimci.com
Instagram: @ilker_yardimci

कलाकार के बारे में

İlker Yardımcı

मूर्तिकार, डिज़ाइनर और शिक्षाविद (प्रो. डॉ.)

इल्केर यारदिमजी का मूर्तिकला-अभ्यास समकालीन सार्वजनिक कला के भीतर एक विशिष्ट अन्वेषण के रूप में उभरता है, जो ज्यामिति, रिक्तता और सामग्री के बीच के तनाव को एक बौद्धिक भाषा में बदल देता है। उनके काम में मूर्ति केवल आयतनात्मक उपस्थिति या सौंदर्य-वस्तु नहीं, बल्कि एक गतिशील संरचना है जो स्थान से संबंध बनाती है, दर्शक की गति के साथ बहुगुणित होती है और आसपास की रिक्तता को अर्थ के सक्रिय क्षेत्र में बदल देती है।

उनकी रूप-दृष्टि ब्रह्मांड की मूलभूत ज्यामितीय व्यवस्था में एक सहज और बौद्धिक रुचि से पोषित होती है। गोले, प्रिज़्म, दीर्घवृत्त, घन जैसे मूल रूप उनके हाथों में केवल ज्यामितीय संदर्भ नहीं रहते; वे गति, संतुलन, लय और अस्तित्व पर आधारित अमूर्त कथाओं के वाहक बन जाते हैं। इस प्रकार उनकी मूर्तियाँ गणितीय सटीकता और काव्यात्मक अंतर्ज्ञान के बीच दोलन करती हैं।

उनकी कृतियों में रिक्तता रूप का विपरीत नहीं, बल्कि रूप को जन्म देने वाला एक निर्माणकारी तत्व है। स्टील प्लेटों के बीच के अंतराल, कटाव, खुलाव और सतहें प्रकाश, समय और दर्शक की दृष्टि को मूर्ति में प्रवेश करने देती हैं। दर्शक केवल कृति को देखता नहीं; वह अपनी शारीरिक गति से उसे पूर्ण करता है।

सार्वजनिक स्थान से संबंध उनकी कला की परिभाषित धाराओं में से एक है। उनके लिए शहरी स्थान केवल पृष्ठभूमि नहीं, बल्कि एक जीवंत मंच है जो रूप के अर्थ का विस्तार करता है, उसे मानवीय पैमाने से जोड़ता है और सामूहिक स्मृति को छूता है। Confusion of Prism और Lyrical Message जैसी अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सराही गई कृतियाँ दिखाती हैं कि यह दृष्टिकोण सार्वजनिक कला की केवल स्थानीय नहीं, बल्कि सार्वभौमिक भाषा स्थापित करता है।

उनकी अकादमिक पहचान और कलात्मक सृजन एक-दूसरे को पोषित करते हैं। कंप्यूटर-सहायित डिज़ाइन की संभावनाओं को पारंपरिक धातु-शिल्प से जोड़कर वे समकालीन मूर्तिकला की वैचारिक और तकनीकी सीमाओं का विस्तार करते हैं।

इल्केर यारदिमजी की मूर्तियाँ एक ऐसा सौंदर्य-ब्रह्मांड रचती हैं जिसमें सरल ज्यामितियाँ जटिल अर्थों में, भारी धातुएँ हल्की अनुभूतियों में और स्थिर वस्तुएँ गतिशील अनुभवों में बदल जाती हैं। इस ब्रह्मांड में मूर्ति मौन नहीं रहती; वह शहर, प्रकाश, रिक्तता और मनुष्य को संबोधित एक गीतात्मक संदेश बन जाती है।

प्रस्तावना

विषय-वस्तु और मूर्तियों पर

हमारे समय के लोग अपने युग के अनुरूप आत्मा और जीवन की एक नई अवस्था जी रहे हैं।

यह नई अवस्था तब भी प्रकट होती है जब हम अकेले होते हैं, और तब भी जब हम एक समुदाय के रूप में साथ आते हैं। जैसे-जैसे अवधारणाएँ अपना अर्थ खोती हैं, और नई अवधारणाएँ अभी जीवित अनुभव में अपना प्रतिरूप नहीं पा सकी हैं, व्यक्ति और समाज दोनों एक प्रकार के शैशव में लौटा दिए जाते हैं — फिर से घुटनों के बल चलना सीखते हुए। फिर से सीखना, फिर से समझना, और जीवन को नए सिरे से रचना...

लोग समय से उतनी तेज़ी से गुज़र रहे हैं जितनी तेज़ी से इतिहास में कोई समाज नहीं गुज़रा। वे उपस्थिति और अनुपस्थिति के बीच, और चेतना की अनुपस्थिति में ऐसा कर रहे हैं। फिर भी कला अब भी संसार में कहीं भटक रही है — फिर से साक्षी, फिर से समझने का प्रयास करती हुई।

मेरा मानना है कि मेरी पीढ़ी इस दरार को थोड़ा अधिक स्पष्टता से देख और समझ सकती है। एकांत और अस्तित्व से, समय और मौन से हमारा संबंध कहीं अधिक परिभाषित, कहीं अधिक मानवीय था। इस नए किनारे पर, जहाँ हम एक ही कदम में पहुँच गए, मौन अब मुझे परिचित नहीं लगता। इस नए मौन का क्रम — जिसे मैं अनुभव करने का प्रयास करता हूँ, और जिसमें मैं अस्तित्व में रहने का प्रयास करता हूँ — उसे मैं केवल रूप के माध्यम से ही व्यक्त कर सका हूँ...

— İlker Yardımcı

मौन का क्रम

मौन का क्रम शृंखला मौन को केवल ध्वनि की अनुपस्थिति के रूप में नहीं, बल्कि रूप, रिक्तता और स्थान के बीच के अदृश्य संबंधों से निर्मित एक सौंदर्यात्मक क्रम के रूप में देखती है। इस शृंखला में ज्यामितीय अमूर्तन पर आधारित कलाकार की मूर्तिकला-भाषा संतुलन, लय और गति की अवधारणाओं के माध्यम से अस्तित्वगत गहराई प्राप्त करती है।

रूप की सरलता और संरचना की जटिलता के बीच का तनाव इस शृंखला के मूल शिल्प-चरित्र को परिभाषित करता है। जिन मूर्तियों में ज्यामितीय अनुशासन जैविक प्रवाह से मिलता है, उनमें द्रव्यमान और रिक्तता दो पूरक, निर्माणकारी तत्वों के रूप में प्रकट होते हैं। रूप की निरंतरता को तोड़ने वाले नकारात्मक स्थान केवल भौतिक खुलाव नहीं, बल्कि बौद्धिक दहलीज़ें हैं, जिनसे होकर स्थान मूर्ति के अर्थ में प्रवेश करता है। इस प्रकार स्थिर दिखने वाले द्रव्यमान एक आंतरिक गति पा लेते हैं, और दर्शक की दृष्टि जो दिखता है और जो अनुभव होता है, उनके बीच विचरती है।

कांस्य और धातु के भौतिक भार को रूप के समकालीन दृष्टिकोण से जोड़कर यारदिमजी हल्केपन और निरंतरता का ऐसा भाव रचते हैं जो सामग्री की भौतिक उपस्थिति से परे जाता है। सतहों का लयात्मक प्रवाह, रिक्तताओं का संतुलन और रूपों के आपसी संबंध मौन को एक निष्क्रिय अवस्था से मुक्त कर उसे मूर्ति की आंतरिक गतिशीलता को परिभाषित करने वाला एक मूल सिद्धांत बना देते हैं।

मौन का क्रम मूर्तिकला-चिंतन का एक ऐसा क्षेत्र प्रस्तुत करता है जो क्रम और अनिश्चितता, गति और स्थिरता, उपस्थिति और अनुपस्थिति के बीच की सीमाओं पर प्रश्न करता है। यहाँ मौन समकालीन जीवन की गति और दृश्य अतिसंतृप्ति के विरुद्ध शुद्धि की एक संभावना देता है, और दर्शक को वस्तु की भौतिक सीमाओं से परे अपनी ही अनुभूति और विचार की गहराई से मिलने के लिए आमंत्रित करता है। मौन अब कोई अभाव नहीं; यह एक सौंदर्यात्मक क्रम है जिसमें रूप अपनी लय पाता है, रिक्तता अर्थ पाती है, और अदृश्य उतनी ही प्रबल उपस्थिति बन जाता है जितना दृश्य।

कृतियों पर

प्रत्येक मूर्ति कांस्य के लिए परिकल्पित है, जिसे लुप्त-मोम विधि से ढाला जाता है।

चित्र तैयार कृतियों के डिजिटल दृश्यांकन हैं।

प्रत्येक कृति हस्ताक्षरित, क्रमांकित सीमित संस्करण में उपलब्ध है।

कैप्शन में शीर्षक, वर्ष, सामग्री और ऊँचाई दी गई है।

संबंधित रूप आमने-सामने के पृष्ठों पर दिखाए गए हैं।



मौन का क्रम I

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ कंधे से कंधा मिलाकर खड़ी हैं, फिर भी कोई किसी को छूती नहीं। वृत्त उन्हें एकत्र करता है, पर एक नहीं बनाता। यह शृंखला का पहला मौन है: साथ होना, और फिर भी अकेला।

“हम सब नाली में हैं, पर हममें से कुछ तारों की ओर देख रहे हैं।”

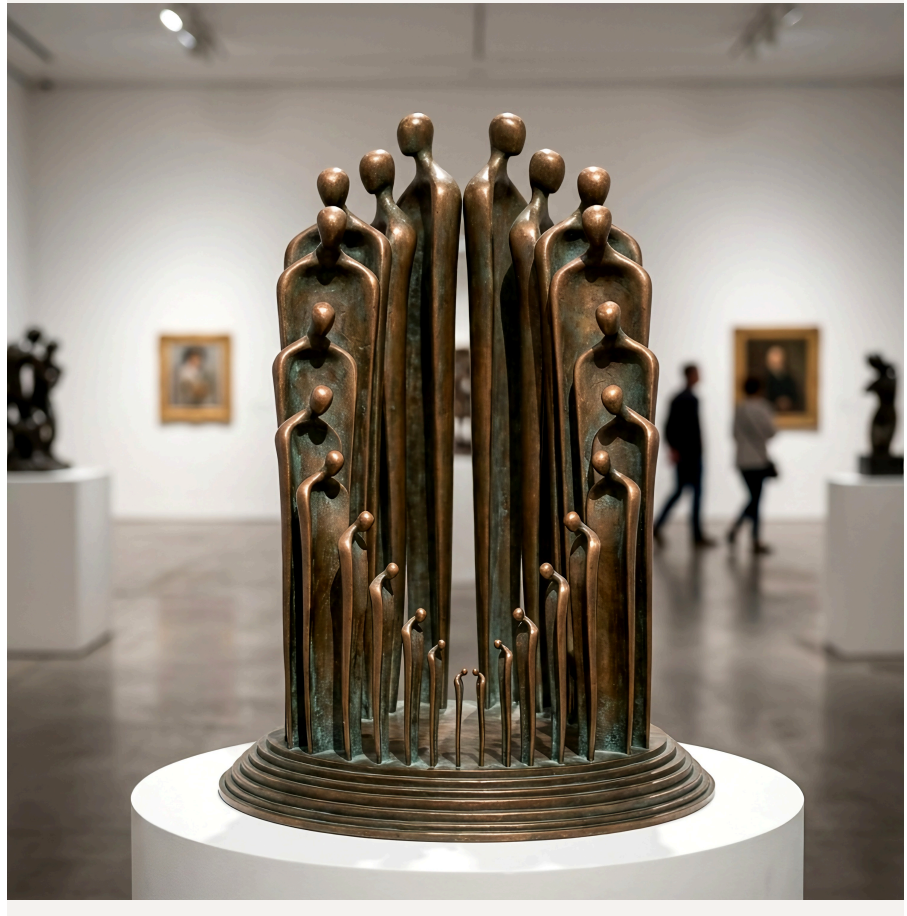
— ऑस्कर वाइल्ड, लेडी विंडरमियर्स फ़ैन (1892) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम II

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक बंद वृत्त में खड़ी हैं, एक-दूसरे के सामने, मानो सभा में या जागरण में। कुछ कहा नहीं जाता, फिर भी सब कुछ साझा होता है। यही वह क्रम है जिसकी यह शृंखला खोज करती रही है।



मौन का क्रम III

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

सीधे शरीर एक नपी-तुली लय में उठते हैं, जैसे एक ही क्षण में रोकी गई साँसें। यहाँ क्रम बाहर से थोपा नहीं गया; वह हर रूप के अपनी दूरी बनाए रखने से उपजता है। कांस्य उस भीड़ को याद करता है जो बोलना भूल चुकी है।

“मौन वह तत्व है जिसमें महान वस्तुएँ स्वयं को गढ़ती हैं।”

— टॉमस कार्लाइल, सार्टर रिसार्टस (1833–34) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम IV

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ बिना दीवारों वाले आँगन में मानो चक्कर लगा रही हैं। उनकी चाल का कोई गंतव्य नहीं, केवल दोहराव है। वैन गॉग के कैदियों की एक शांत प्रतिध्वनि — एक ऐसा चक्कर जिसे समय अब नहीं मापता।

“मैंने कभी ऐसा मनुष्य नहीं देखा
जो इतनी लालसा भरी आँखों से
उस छोटे से नीले तंबू को देखे
जिसे कैदी आकाश कहते हैं।”

— ऑस्कर वाइल्ड, द बैलड ऑफ़ रीडिंग गॉल (1898) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम V

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियों का एक कसा हुआ वृत्त भीतर की ओर मुड़ता है, मानो किसी खाली केंद्र की रक्षा कर रहा हो। वे जिसकी रक्षा करती हैं, वह शायद उनके बीच के स्थान से अधिक कुछ नहीं। रिक्तता ही असली विषय बन जाती है।

“हम मिट्टी से घड़ा गढ़ते हैं, पर भीतर की रिक्तता ही वह धारण करती है जो हम चाहते हैं।”
— लाओत्से, ताओ ते चिंग, अध्याय 11 (स्वयं अनूदित)

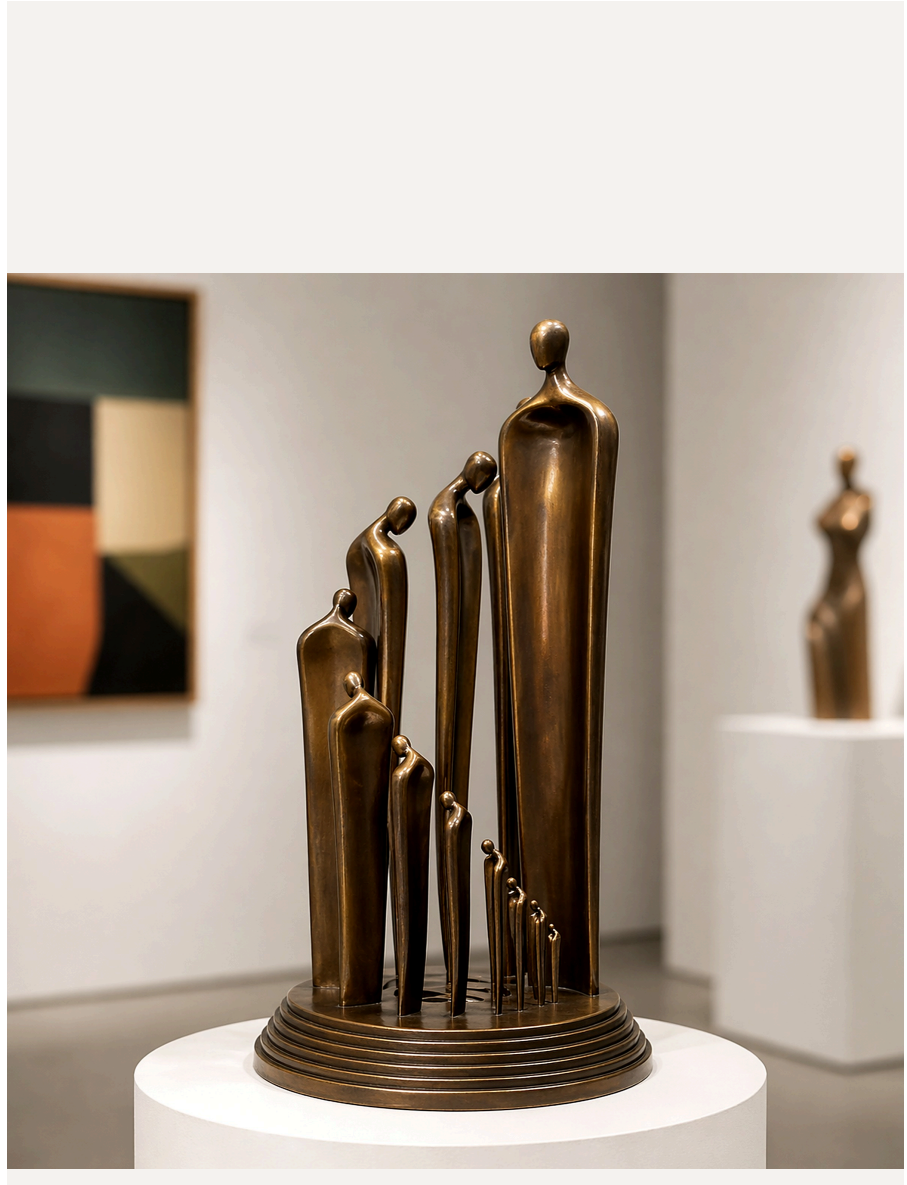


मौन का क्रम VI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

पतले रूप ऊपर की ओर खिंचते हैं, इतने पतले कि अपना ही भार मुश्किल से उठा सकें। वे उस प्रकाश की ओर झुकते हैं जिसे हम नहीं देखते। यहाँ नाज़ुकता धैर्य का एक रूप है।

“आशा वह पंखों वाली चीज़ है
जो आत्मा में बसेरा करती है।”
— एमिली डिकिन्सन, लगभग 1861 (प्रकाशित 1891) (स्वयं अनूदित)

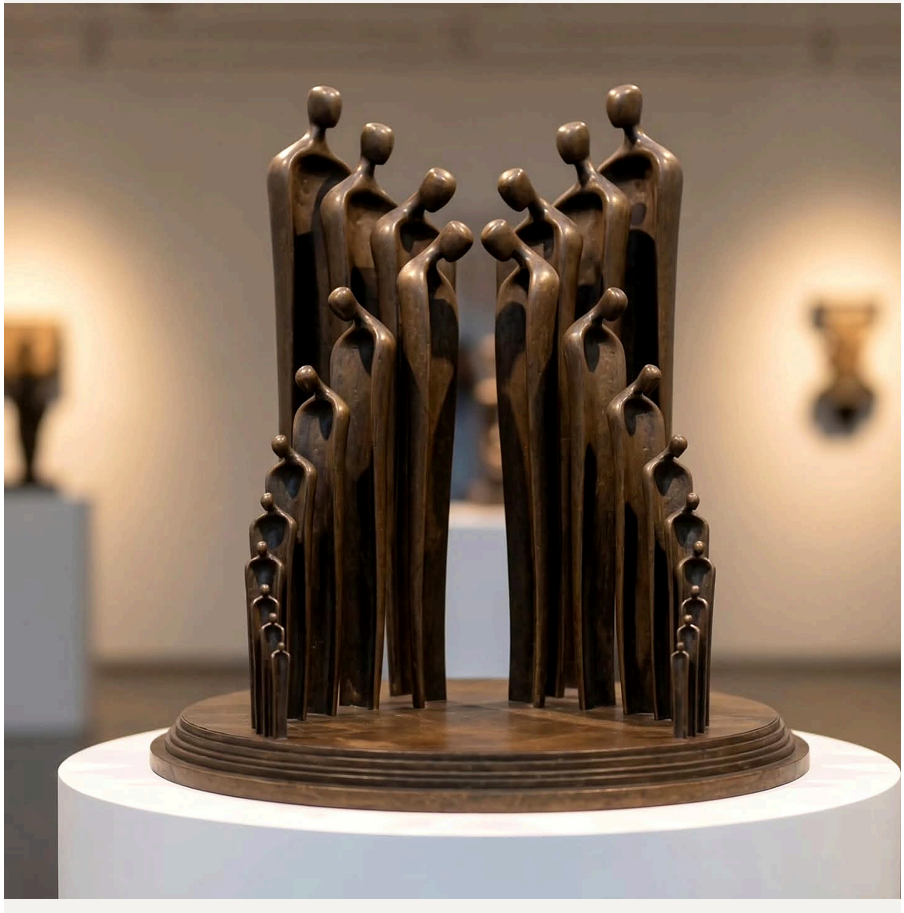


मौन का क्रम VII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

अपने सार तक सिमटी एक भीड़: खड़ी रेखाएँ, लय, अंतराल। चेहरे घुल गए हैं, केवल मुद्रा शेष है। शायद आज हम इसी तरह एक-दूसरे को पहचानते हैं।

“अधिकांश लोग शांत निराशा का जीवन जीते हैं।”
— हेनरी डेविड थोरो, वॉल्डेन (1854) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम VIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

अलग-अलग ऊँचाई के स्तंभ साथ-साथ खड़े हैं, हर एक अपना माप थामे। कोई नेतृत्व के लिए ऊपर नहीं उठता; कोई पीछे नहीं छूटता। धीरे-धीरे पढ़ें तो पंक्ति बिना शब्दों का एक वाक्य बन जाती है — लय वाला एक मौन।

“फाड़ने का समय, और सीने का समय; चुप रहने का समय, और बोलने का समय।”
— सभोपदेशक 3:7 (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम IX

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

दूर से यह समूह एक ही स्थापत्य की तरह पढ़ा जाता है; पास से, अलग-अलग जीवनों की तरह। इन दो पाठों के बीच मौन का क्रम है। दर्शक से दोनों जगह खड़े होने को कहा जाता है।

“कोई भी मनुष्य एक द्वीप नहीं है, अपने आप में संपूर्ण।”
— जॉन डन, डिवोशन्स अपॉन इमर्जेंट ऑकेज़न्स, ध्यान XVII (1624) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम X

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

हरी पैटिना कांस्य पर ऐसे जमती है जैसे समय दृश्य हो गया हो। आकृतियाँ लगता है बहुत देर से प्रतीक्षा कर रही हैं, और आगे भी करेंगी। अपक्षय मूर्ति की स्मृति है।

“समय बीतती घटनाओं की एक नदी है, और उसकी धारा प्रबल है।”

— मार्कस ऑरेलियस, मेडिटेशन्स IV.43 (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

गहरी हरी पैटिना वृत्त को एक घने द्रव्यमान में समेट देती है। इतिहास के अपक्षय के नीचे भी क्रम बना रहता है। जो खड़ा रहता है, वही है जो मौन रहा।

“शेष मौन है।”
— विलियम शेक्सपियर, हैमलेट, V.ii (लगभग 1600) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

एक कांस्य चक्र को एक वर्गाकार रिक्तता ने खोल दिया है, उसका किनारा खड़ी आकृतियों से घिरा है। वे खुलाव को ऐसे घेरती हैं जैसे किसी अनुपस्थित चित्र के चारों ओर फ़्रेम। खिड़की जो दिखाती है, वह केवल पीछे का कमरा है — और दर्शक।

“वे भी सेवा करते हैं जो केवल खड़े रहकर प्रतीक्षा करते हैं।”

— जॉन मिल्टन, सॉनेट XIX, “ऑन हिज़ ब्लाइंडनेस” (लगभग 1655) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

ऊँची आकृतियाँ एक तंग वृत्त में सिमटी हैं, भीतर वाली सबसे ऊँची। दूर से समूह एक गहरे स्तंभ की तरह पढ़ा जाता है। निकटता यहाँ अकेलेपन को घोलती नहीं; बस उसे और घना कर देती है।



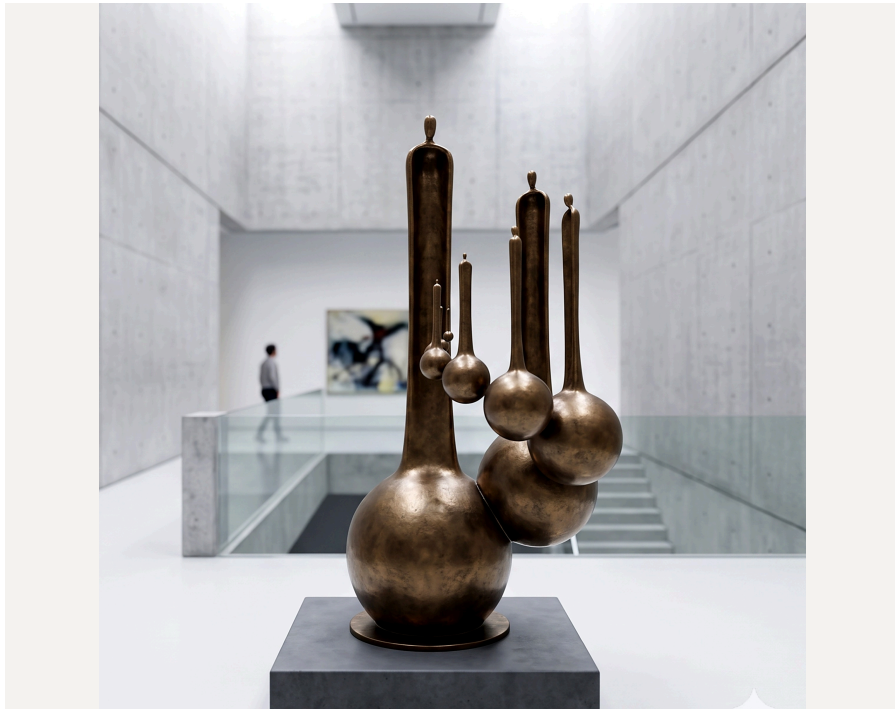
मौन का क्रम XIV

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

एक लंबी पंक्ति, लगभग कंघी या कीबोर्ड जैसी, आधार पर एक ही मुद्रा दोहराती है। दोहराव व्यक्तियों को एक पैटर्न में बदल देता है — और पैटर्न को बिना ध्वनि के संगीत में।

“सुनी गई धुनें मधुर हैं, पर अनसुनी
और भी मधुर हैं।”
— जॉन कीट्स, ओड ऑन अ ग्रीशियन अर्न (1819) (स्वयं अनूदित)





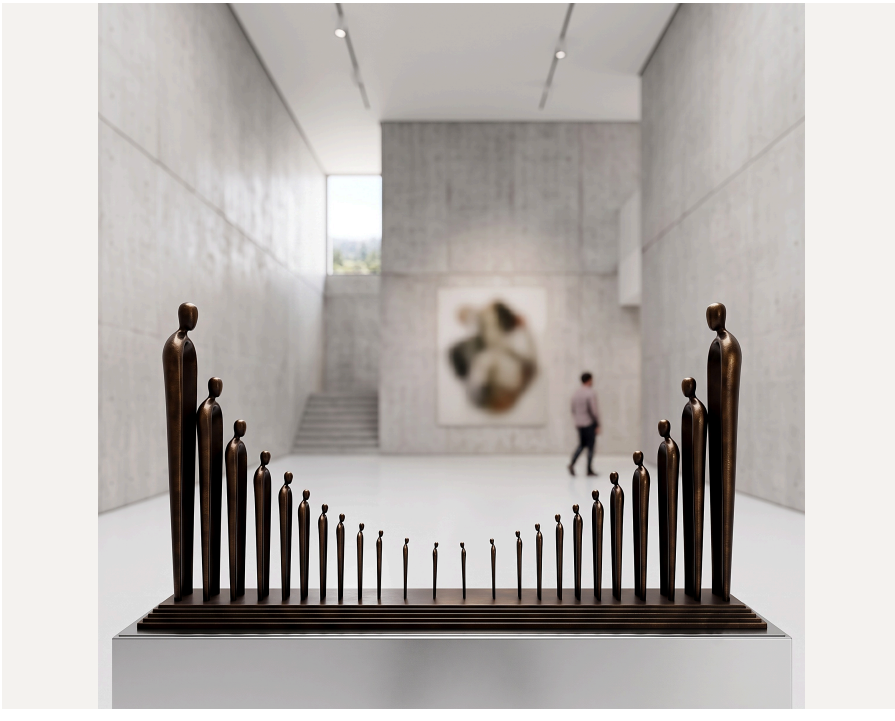
मौन का क्रम XV

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

खड़ी आकृतियों के बीच एक गोला टिका है — एक संसार, एक भार, या एक प्रश्न। शरीर न उसे उठाते हैं, न उससे मुँह मोड़ते हैं। वे बस उस चीज़ के साथ स्थान साझा करते हैं जिसे वे सुलझा नहीं सकते।

“इन अनंत अंतरिक्षों का शाश्वत मौन मुझे भयभीत करता है।”

— ब्लेज़ पास्कल, पांसे (1670) (स्वयं अनूदित)





मौन का क्रम XVI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

पतली खड़ी रेखाएँ एक गहरे वक्र के साथ नीचे उतरती हैं और दोनों छोरों पर फिर उठती हैं, जैसे ज़मीन की ओर झुका एक पुल। आकृतियाँ प्रस्थान और आगमन के बीच खड़ी हैं। वहाँ रुकना पहले से एक निर्णय है।

“तुम एक ही नदी में दो बार नहीं उतर सकते।”
— हेराक्लिटस, प्लेटो के क्रेटिलस 402a में उद्धृत (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XVII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियों की एक पंक्ति एक ही लहराते छत्र के नीचे खड़ी है, जो एक पतले डंठल पर टिका है। हर एक साझा छत के नीचे अपना स्थान थामे है। छत्र ध्वनि-तरंग की तरह हिलता है; आकृतियाँ मौन में उसे सुनती हैं।

“शांत रहो, और जानो कि मैं परमेश्वर हूँ।”
— भजन संहिता 46:10 (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XVIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

एक वलय आकृतियों को ऐसे थामे है जैसे फ़्रेम किसी चेहरे को। वृत्त के भीतर समय रुका हुआ लगता है। वलय एक सीमा भी है और एक आलिंगन भी।

“आँख पहला वृत्त है; उससे बनने वाला क्षितिज दूसरा।”
— राल्फ़ वाल्डो इमर्सन, सर्कल्स (1841) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XIX

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

वलय के भीतर शरीर घड़ी के डायल पर घंटों की तरह पंक्तिबद्ध हैं। हम उनके पार ऐसे देखते हैं जैसे किसी खिड़की से। वृत्त समय से अधिक एक मौन को मापता है।



मौन का क्रम XX

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

छिद्रों से भरा एक चक्र: उपस्थिति में तराशी गई अनुपस्थिति। जहाँ से कुछ हटाया गया है, वहाँ से प्रकाश गुज़रता है। यहाँ रिक्तता हानि नहीं, साँस है।

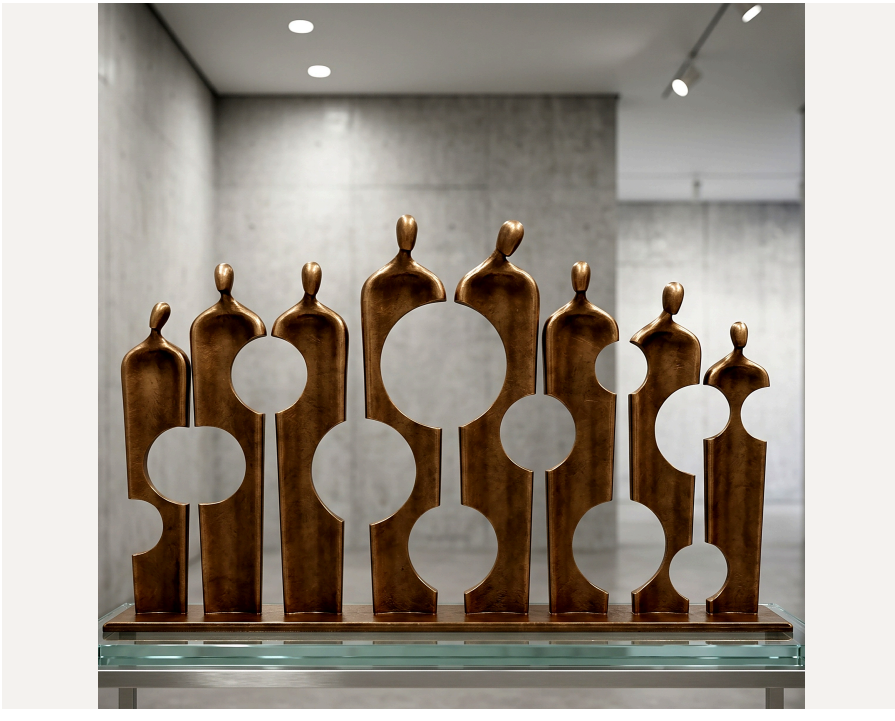


मौन का क्रम XXI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

छिद्र चेहरों, खिड़कियों या खाली आसनों की तरह पढ़े जाते हैं। आँख उन्हें उससे भर देती है जो उसे याद है। मूर्ति दर्शक के अपने मौन से पूर्ण होती है।

“वाणी समय की है, मौन अनंतता का।”
— टॉमस कार्लाइल, सार्टर रिसार्टस (1833–34) (स्वयं अनूदित)





मौन का क्रम XXII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

गोल सिर एक साझा दीवार से उठते हैं जिसमें वृत्ताकार खुलाव हैं। वे भिन्न हैं, पर अलग नहीं — पदार्थ के एक ही शरीर से तराशा गया एक समुदाय, जो अपनी रिक्तताओं से साँस लेता है।



मौन का क्रम XXIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

एक कांस्य बेलन तिरछा कटा है, उसका भीतरी भाग खड़ी आकृतियों से भरा है। वे एक साथ आश्रय में भी हैं और खुली भी। आश्रय भी एक प्रकार का अकेलापन बन सकता है।

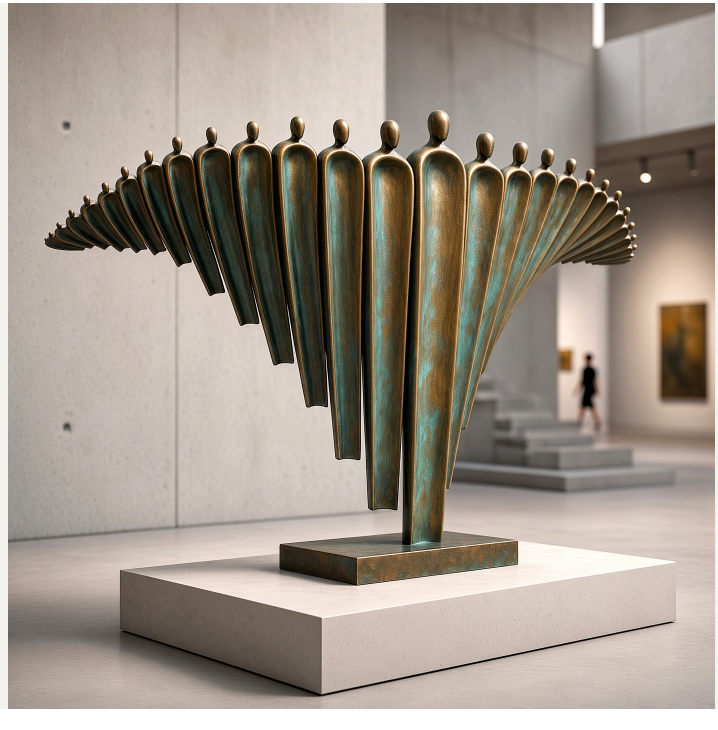


मौन का क्रम XXIV

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक खड़ी, झुकी सीढ़ी पर एक के पीछे एक उठती हैं, सबसे ऊँची शिखर पर। पूरा शरीर झुकता है पर गिरता नहीं। अनिश्चितता एक मुद्रा बन जाती है।





मौन का क्रम XXV

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

छड़ें एक संकरे डंठल से ऊपर एक चौड़े हरे पंखे में फैलती हैं। गति संकेतित है, कभी पूरी नहीं होती। उस निलंबन में मौन आकार लेता है।



मौन का क्रम XXVI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक लंबे दीर्घवृत्ताकार पतवार से उठती हैं, जैसे न चलने वाली नाव में यात्री। बीच में ऊँची, छोरों पर नीची, वे एक ही दिशा थामे हैं। यात्रा स्वयं प्रतीक्षा है।



मौन का क्रम XXVII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक ही वक्र में झुकती हैं, जैसे बजाए जाने की प्रतीक्षा करती वीणा के तार। हर एक अकेली खड़ी है, फिर भी साथ मिलकर ध्वनि का एक आकार थामे हैं। यहाँ मौन पहले स्वर से पहले का संगीत है।

“संगीत, जब कोमल स्वर मर जाते हैं,
स्मृति में गूँजता रहता है।”
— पर्सी बिश शेली, “To —” (1824) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXVIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

रूप एक ही जड़ से सीढ़ी-दर-सीढ़ी उठते हैं, हर एक पिछले से थोड़ा ऊँचा। विकास साँसों की एक सीढ़ी जैसा दिखता है। जो नीचे से शुरू होता है, वह ऊपर पहुँचने पर समाप्त होता है, ज़मीन छोड़े बिना।

“जीवन की वही धारा जो दिन-रात मेरी नसों में बहती है, संसार में बहती है।”

— रवींद्रनाथ ठाकुर, गीतांजलि, 69 (1912) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXIX

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

ऊँची आकृतियाँ भारी गोलों के बीच खड़ी हैं, मानो संसार उनके पैरों में रख दिया गया हो। भार और हल्कापन एक ही आधार साझा करते हैं। शरीर प्रतीक्षा करते हैं; गोल रूप अपना समय रखते हैं।

“हम उसी सामग्री से बने हैं
जिससे स्वप्न बनते हैं, और हमारा छोटा जीवन
नींद से घिरा है।”
— विलियम शेक्सपियर, द टेम्पेस्ट, IV.i (1611) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXX

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियों की एक लंबी पंक्ति एक ही रेखा थामे है, जैसे एक वाक्य जिसे कोई पूरा नहीं करता। उनके अंतराल सटीक हैं, चेहरे अनुपस्थित। क्रम ही एकमात्र बची हुई भाषा बन जाता है।

“और हम यहाँ हैं जैसे किसी अँधेरे होते मैदान पर।”
— मैथ्यू आर्नल्ड, “डोवर बीच” (1867) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXXI

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक गुंबद के शिखर पर खड़ी हैं, उसके वक्र के सामने छोटी। उनके नीचे का मेहराब एक रोकी हुई साँस है। वे संसार के शिखर पर एकत्र हैं, और संसार शांत है।

“चुने हुए मौन, मेरे लिए गाओ
और मेरे घुमावदार कान पर थाप दो।”
— जेरार्ड मैनली हॉपकिन्स, “द हैबिट ऑफ़ परफ़ेक्शन” (1866) (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXXII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियों का एक मेहराब एक खाली वृत्त को घेरता है। वे जिसे घेरती हैं, वह कोई वस्तु नहीं, बल्कि एक खुलाव है, प्रकाश की एक दहलीज़। उसके पार जाने के लिए पहले स्थिर होना पड़ता है।

“हमारे जीवन-पथ के मध्य में
मैंने स्वयं को एक अँधेरे वन में पाया।”
— दांते अलीगियेरी, इन्फ़र्नो, I (स्वयं अनूदित)



मौन का क्रम XXXIII

2026 · कांस्य · ऊँचाई: 30 सेमी

आकृतियाँ एक केंद्रीय कटोरे के चारों ओर एकत्र गोलों पर खड़ी हैं, सबसे ऊँची बीच में। गोल रूपों के सामने छोटी होकर भी वे सीधे खड़े रहने पर अड़ी हैं। गरिमा मुद्रा का विषय है।

“रेत के एक कण में संसार देखना
और एक जंगली फूल में स्वर्ग।”
— विलियम ब्लेक, ऑगरीज़ ऑफ़ इनोसेंस (लगभग 1803) (स्वयं अनूदित)

कोलोफ़ोन

मौन का क्रम

İlker Yardımcı · मूर्तियाँ 2026

स्कैन करें · ilkeryardimci.com

ilkeryardimci.com
mail@ilkeryardimci.com
Instagram: @ilker_yardimci
LinkedIn: linkedin.com/in/ilker-yardimci-24461a3a3

© 2026 İlker Yardımcı। सर्वाधिकार सुरक्षित। चित्र-छायाचित्र: © Spartak Dabriyranok।
सभी उद्धरण सार्वजनिक-क्षेत्र के स्रोतों से हैं; हिंदी अनुवाद स्वयं किए गए हैं।
टाइपफ़ेस: EB Garamond / Noto Serif Devanagari। मुख्य रंग: ब्रांड नारंगी #D4641D (≈ Pantone 7578 C)।
ISBN: [आवंटित किया जाना है]